एकांकी

एकांकी नाटकों का ही विकसित रूप है। हिन्दी नाटकों का आगामी विकास एकांकी है। इसकी शुरुआत पाश्चात्य प्रभाव से होती है। पश्चिम में २० शती में (1910-1920 के आसपास) Little Theatre Movement शुरु हुआ, यहाँ नाटकों में एक ही अंक होते हैं, पर दृश्य कई होते हैं। एवसर्ड नाटक के साथ ही एकांकी भारत में आया। "उसड़," "ताम्बे की कीड़ा" आदि मुख्यतः एकांकी ही हैं।

विशेषतायें:-

i) इसमें एक ही घटना है और उसी का विकास, विस्तार होता है।

ii) संक्षिप्त होता है।
iii) कम पात्र होते हैं।
iv) मंचसज्जा सामान्य रहती है,
v) ½ - 1 घण्टे के बीच खेला जा सकता है।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ, ऑस्कर वाइल्ड आदि महत्वपूर्ण नाम हैं। यहाँ मानव जीवन के किसी एक अंश/पक्ष का चित्रण होता है।

हिन्दी में एकांकी की शुरुआत को लेकर विवाद है। संस्कृत साहित्य में जो विविध विधा है - भाण, वीथि आदि, यह सब भी एक अंक के ही हैं। विषस्य विषमौषधम्, अंधेर नगरी आदि भारतेन्दु के नाटकें भी वस्तुतः एकांकी ही हैं। इसीलिए हिन्दी में इससे एकांकी की शुरुआत एक पक्ष मानते हैं। कई लोग कहते हैं प्रसाद का "एक घूँट" से इसकी शुरुआत होती है। पर यह एकांकी मूल्यहीनता से प्रेरित है, जो बात भारतेन्दु या प्रसाद में नहीं था। इसलिए भुवनेश्वर के "तांबे की कीड़ा" से इसकी शुरुआत मानी जानी चाहिए। उनके दूसरी रचनाएं हैं - "कारवाँ" "शैतान"।

हिन्दी एकांकी को रामकुमार वर्मा ने ही स्थापित किया और यह एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्वीकृत हुई। उदयशंकर भट्ट, सेठ गोविन्द दास, लक्ष्मीनारायण

27/5/09 209

मिश्र, हरिकृष्ण प्रेमी, लक्ष्मीनारायण लाल, मोहन राकेश, गिरिजा कुमार माथुर आदि तमाम लोगों ने एकांकी लिखे।

कहानी - उपन्यास का संबंध ही एकांकी - नाटक में है। दोनों की विषयवस्तु के संरचना में अंतर होता है। ऐसा नहीं है कि कहानी को फैला देने से उपन्यास होगा, और उपन्यास को सिकुड़ देने से कहानी हो जाएगा।

नाटक से एकांकी बनने का और एक कारण है आधुनिक समय में समय की कमी, समय का दबाव। आधुनिक जीवन की परिस्थितियाँ भी इसके लिए जिम्मेदार हैं। पर इसका भी विकास तेजी से नहीं हो रहा है। एकांकी का जगह आज फिर से धारावाहिकों ने ले लिया।

प्रवृत्तिगत विश्लेषण की जहाँ तक बात है, नाटकों से इसकी प्रवृत्ति अलग नहीं है। क्योंकि नाटक लिखने वाले लोगों के ही एकांकी लिखे। एबसर्ड थियेटर की नकारात्मक सोच आदि का चित्रण होता है। मुद्राराक्षस के नाटकों में दलितों की समस्या उठायी जाती है।

वर्तमान हिन्दी साहित्य में यदि नाटक की कोई विधा चल रही है, तो वह एकांकी के रूप में ही है, जो संक्षिप्त है, किसी एक

निश्चित घटनाविशेष को लेकर है।

आधुनिक एकांकीयों का वर्गीकरण इसप्रकार के हैं:→ i) सोद्देश्य एकांकी,
ii) समस्या - एकांकी,
iii) प्रहसन एकांकी,
iv) हास्य और व्यंगमूलक एकांकी,
v) रेडियो एकांकी

आदि।

i) सेठ गोविन्द दास का - "हंगर स्ट्राइक", "प्राति - उत्थान"।

ii) रामकुमार वर्मा का - "एक्ट्रेस", "सपनों की रात"। भुवनेश्वर का - "शैतान"।

iii) रामकुमार वर्मा का - "एक तोले अफीम की कीमत"। उदय शंकर भट्ट का - "अतीत", "वर्गो निर्वाचन"।

iv) उदयशंकर भट्ट का - "नेता"। सेठ गोविन्द दास का - "अधिकार लिप्सा"। भुवनेश्वर का - "स्ट्राइक"। रामकुमार वर्मा का - "कहाँ से कहाँ"।

v) रेडियो एकांकी में, विष्णु प्रभाकर का - "माँ का हृदय"। रामकुमार वर्मा का - "ऋतुराज"।